प्यार और सही शिक्षा से

बेटियां बोझ बांटेंगी, बोझ बनेंगी नहीं

रेखा जैन

सुबह चाय पीते समय समाचारपत्र पढ़ते हुए मैं देखती हूं कि पिछले कुछ सालों में शायद ही कोई दिन ऐसा होगा जबकि उसमें किसी घिनौने अपराध का जिक्र न किया गया हो। अक्सर यही पढ़ने में आता है कि आज किसी लड़की को दहेज के लालचियों ने जलाकर मार दिया या उनके जुल्मों से तंग आकर उसने आत्महत्या कर ली। या फिर नाबालिग लड़की के साथ किसी ने अपना मुंह काला किया। आजकल ऐसी घटनाओं से समाचारपत्र भरे रहते हैं।

इन घटनाओं को देखकर मन में एक डर उठता है कि आज जिन बेटियों को हम इतने लाड़-प्यार से पाल रहे हैं, कहीं किसी दिन वह भी इन घटनाओं का शिकार तो नहीं बन जाएंगी। यदि कभी हमारी बेटी के साथ कोई ऐसी स्थिति आ पड़े तो हम क्या करेंगे। शायद इसीलिए हमारे समाज में बेटियों को बोझ समझा जाता है। क्या इन सबसे बचने के लिए बेटियां होनी ही नहीं चाहिए?

मेरी तीन बेटियां हैं। मुझे उनसे बहुत खुशी मिलती है। जब मुझे पहला गर्भ ठहरा तो मुझे अहसास हुआ कि मैं भी अपनी ही तरह के एक इंसान का सृजन अपने में से कर सकती हूं। उन क्षणों में मुझे जो आंतरिक खुशी मिली उसका मैं बखान नहीं कर सकती। मैंने उसके लिए अपने हाथों से दो-तीन फ्राकें सिलीं और कुछ स्वैटर भी बनाए। 20 जनवरी को बच्ची ने जन्म लिया। उसके रोने की पहली आवाज सुनकर लगा कि वह मुझे मां-मां कहकर पुकार रही हो। वह मेरे जीवन का सबसे अधिक सुखद क्षण था।

समय का चक्र

धीरे-धीरे बिटिया बड़ी होने लगी। उसे नहलाने, सुलाने, दूध पिलाने जैसे काम करने में मुझे भी अपने बड़े होने का अहसास होता। हर कुछ अच्छा लगने लगा। किलकारियां मारती तो लगता आंगन में स्वर्ग उतर आया है।

समय बीतता गया। वह सरकने लगी। घुटनों चलने लगी। खड़ी होने लगी। उंगली थाम कर चलने लगी। एक दिन अपने पांवों भी चलने लगी। गिर-गिर कर उठने लगी। बड़ी होने लगी।

उसके साथ-साथ मैं भी बड़ी होती चली गई। पता ही नहीं चला कब मैं इतनी परिपक्व हो गई। सहन शक्ति इतनी कब आ गई। इतनी कोमल कब और कैसे हो गई। लगा, जैसे उसे जन्म देने के साथ-साथ मैंने खुद को भी नया जन्म दिया हो। उसके लिए सपने देखते-देखते मैं समाज की हर बेटी के लिए सपने देखने लगी। मेरी बेटी ने मेरे व्यक्तित्व को विस्तार दिया।

जब वह छः साल की थी तो मेरी दूसरी बेटी मानसी ने जन्म लिया। निधि को बहन मिल गई। निधि अपनी बहन को पाकर बहुत खुश हुई। उसे खेलने के लिए एक साथी मिल गया था। निधि ने प्यार से उसका नाम 'गूज़ी' रखा।

मानसी के दो वर्ष बाद मेरी तीसरी बेटी ने जन्म लिया। निधि अब पहले से भी ज्यादा खुश थी और कहती थी कि अब तो हम तीन बहनें हैं। हमें कोई कुछ नहीं कह सकता। हम तीनों मिलकर सबका मुकाबला करेंगी। मुझे भी लगा कि आज मेरे साथ मेरी छः बांहें और हैं।

मेरे पति भी बेटियों को पालने में मेरी मदद करते हैं। वह भी उनसे बहुत खुश हैं। हम दोनों ने यह कभी नहीं सोचा कि ये बड़ी होकर क्या बनेंगी। बस, यही इच्छा है कि वे अच्छी इंसान बनें और समाज में जीना सीखें।

बहादुरी की शिक्षा दें

घर की चारदीवारियों में तो हम बेटियों को सुरक्षित रख सकते हैं, लेकिन समाज में उन्हें कैसे सुरक्षित रखना है। इसके लिए हमें उन्हें मजबूत बनाना होगा। इसकी प्रेरणा मुझे अपनी बेटी से मिली। उसने मुझे कहा कि "अब तो हम तीन बहनें हैं, हमें कोई कुछ नहीं कह सकता। हम तीनों मिलकर सबका मुकाबला करेंगी।"

जिस तरह मेरी बेटियों की छः बांहें मेरे साथ हैं उसी तरह मेरी, मेरी सास और ननद की मिलाकर छः बांहें और इकट्ठी हो जाएंगी। इस तरह हम छः बांहों को साठ में और साठ को छः सौ में और इस तरह लाखों, करोड़ों बांहें हम अपने साथ खड़ी कर सकती हैं। अपनी शक्ति को बढ़ाकर समाज में हो रहे हर अपराध का मुकाबला कर सकती हैं।

हमें बेटियों को घर में बंद करके कमजोर नहीं बनाना है। बल्कि उन्हें मज़बूत बना कर समाज में खड़ा करना है। बेटियों को लक्ष्मी माना जाता है अर्थात धन की देवी। हमें इस धन को समाज के क्रूर हाथों में नष्ट नहीं होने देना है। उसे सुरक्षित रखना है।

बेटियों को ऐसा बनाना है कि वे स्वयं अपने पैरों पर खड़ी होकर अपनी रक्षा कर सकें। किसी के आधीन न हों और न ही किसी पर बोझ बन कर रह जाएं। बेटी को बेटी बनाकर ही पालें, बोझ बनाकर नहीं। फिर वह किसी पर बोझ नहीं बनेंगी, बल्कि समाज के कमज़ोर कंधों का बोझ बांटेंगी। □